

विचार बिन्दु

जो वस्तु आनंद प्रदान नहीं कर सकती, वह सुन्दर हो ही नहीं सकती। –प्रेमचंद

हमें जानने का हक है

24 जनवरी, 2023, जब से अडानी ग्रुप की कथित वित्तीय अनियमितताओं के संबंध में हिंडनबर्ग रिपोर्ट सार्वजनिक हुई है, यह पूरे देश में चर्चा का विषय बनी हुई है। इसका प्रभाव इतना हुआ कि इसके कारण संसद में भी हंगामे के कारण कोई कार्यवाही नहीं हो पा रही है। अब तक इस पर सरकार की ओर से कोई वक्तव्य तक नहीं आया है। यह रिपोर्ट दो वर्ष के गहन अन्वेषण और शोध के पश्चात जारी की गई है।

इस रिपोर्ट के जारी होने के बाद अडानी ग्रुप की कुल संपत्ति 20 लाख करोड़ रूपए से घटकर 10 लाख करोड़ रूपए रह गई है। इसके शेयर की कीमतें में भी अप्रत्याशित कमी आई है। 15 दिन पहले तक गौतम अडानी दुनिया के तीसरे सर्वाधिक अमीर व्यक्ति थे। अब ये प्रथम 20 की सूची से भी बाहर हो गए हैं। यह घटना और भी अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि गौतम अडानी की संपत्ति में गत 8 वर्षों में अत्यंत तीव्रता से बढ़ोतरी हुई। यहां उल्लेखनीय है कि गौतम अडानी को प्रधानमंत्री के अत्यंत नजदीकी लोगों में समझा जाता है। इनके संबंध वर्तमान प्रधानमंत्री, जब गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तब से बताए जाते हैं। यह भी कहा जाता है कि प्रधानमंत्री के विदेश दौरों के समय अप्रवासी भारतीयों के कार्यक्रम आयोजित कराने का कार्य गौतम अडानी के सहयोग से किया जाता रहा है। गौतम अडानी की प्रधानमंत्री से निकटता के परिप्रेष्य में हिंडनबर्ग रिपोर्ट अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

इस रिपोर्ट में अडानी ग्रुप पर कथित वित्तीय अनियमितताओं से संबंधित कुल 88 आरोप लगाए गए हैं। अडानी ग्रुप द्वारा इसके उत्तर में 413 पेज का वक्तव्य जारी किया गया है, किंतु किसी भी आरोप का स्पष्ट रूप से कोई उत्तर नहीं दिया गया है। इस रिपोर्ट के आते ही स्टॉक एक्सचेंज में हड़कंप मच गया और अडानी ग्रुप के शेयरों में भारी गिरावट आई। इसके बावजूद अडानी ग्रुप की एक कंपनी ने एफ पी ओ के माध्यम से 20000 करोड़ रुपये उगाहे। इस आधार पर यह दिखाने का प्रयास किया गया कि इस रिपोर्ट के आने के बाद भी निवेश कर्ताओं का विश्वास अडानी ग्रुप में यथावत है। आश्चर्यजनक रूप से इसके एक दिन बाद ही अडानी ग्रुप ने इस एफ पी ओ को निरस्त कर दिया। इसकी जानकारी स्वयं अडानी ग्रुप के अध्यक्ष गौतम अडानी द्वारा सभी टी वी चैनल के माध्यम से दी और कहा कि ऐसा नैतिक आधार पर किया गया। वास्तविकता यह है कि इसमें सामान्य व्यक्तियों का निवेश तो नगण्य था और लगभग सारा ही पैसा स्वयं उन्हीं के विश्वस्त लोगों का लगा था।

विभिन्न टीवी चैनलों पर रोज इस विषय पर चर्चा हो रही है। दिलचस्प बात यह है कि भाजपा के प्रवक्ता जो सामान्यतया प्रत्येक डिबेट में बड़-चढ़कर भाग लेते रहे हैं और बड़े प्रभावी रूप से अपनी बात जोर-शोर से रखते हैं, उनमें से कोई भी इस विषय से संबंधित चर्चा में भाग नहीं ले रहा है। संभवतया भाजपा के शीर्ष नेतृत्व द्वारा प्रवक्ताओं को ऐसा करने से रोका गया है।

जब से यह रिपोर्ट आई है, सत्ताधारी दल एवं उनके समर्थकों द्वारा इस रिपोर्ट को भारतीय अस्मिता पर हमला बताया जा रहा है और इसे विदेशों की साजिश तक करार दिया गया है।यह कहना कठिन है कि रिपोर्ट का इस समय सामने आना मात्र संयोग है या कुछ और। यह रिपोर्ट ऐसे समय प्रकाशित हुई है जब भारत जोड़ो यात्रा के माध्यम से राहुल गांधी की लगभग 4000 किलोमीटर की पदयात्रा कन्याकुमारी से कश्मीर तक पूरी हुई है और इसके कारण कांग्रेस में एक प्रकार से उत्साह का संचार हुआ है। यह भी उल्लेखनीय है कि इस रिपोर्ट के बारे में पूरा विपक्ष सरकार पर एकजुट होकर हमलावर है। विपक्ष की प्रमुख मांग है इस विषय पर सरकार संसद में चर्चा कराए ताकि देश की जनता आवश्स्त हो सके कि उसका पैसा सुरक्षित है। इस विषय में प्रश्न केवल वित्तपंति का ही नहीं है, अडानी ग्रुप की कंपनियों के शेयर की कीमत 4000 रुपये से गिरकर 1500 रुपये रह गई है। अडानी ग्रुप को गत कुछ वर्षों में जीवन बीमा निगम, भारतीय स्टेट बैंक द्वारा तथा अन्य राष्ट्रीय कृत बैंकों द्वारा हजारों करोड़ के ऋण दिये गये हैं।

रिपोर्ट से यह सामने आया है कि अडानी ग्रुप के शेयर की कीमत कृत्रिम रूप से बहुत अधिक बढ़ा दी गई और इसी बढी हुई कीमत के आधार पर बैंकों से बहुत अधिक ऋण प्राप्त कर लिया गया। बैंकों के नियमों के अनुसार, शेयर की प्रचलित दर के आधार पर गिरवी रखे गए शेयर का मूल्यांकन किया जाता है उनके बदले में उनके आधे मूल्य तक का ऋण बैंकों द्वारा दिया जाता है। जिस शेयर की कीमत कुछ समय पूर्व डेढ़ सौ रूपए थी उसके 4000 होने का कारण एवं उसकी जांच करना भी उन बैंकों ने उचित नहीं समझा। जब शेयर की कीमत अत्यधिक कम हो गई है, बैंक कैसे अपना ऋण वसूल करेंगे, इस पर प्रश्न चिन्ह लग गया है। जब ऋण का भुगतान नहीं किया जापाना तो बैंकों एवं एलआईसी की स्थिति पर विपरीत प्रभाव पडना संभावित है। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में देश के करोड़ों लोगों ने निवेश किया हुआ है और इसी कारण केवल एक उद्योग समूह पूरे देश के कई नागरिकों को प्रभावित करता है। जहां एक

भारत की नियामक संस्थाओं और बैंकों की योग्यता और क्षमता में कोई संदेह नहीं है। सवाल यह है कि क्या उन्हें स्वतन्त्र रूप से काम करने दिया गया या नहीं। उन्हें केवल छूट दिए जाने की आवश्यकता है कि वह निर्भीक होकर अपने काम को अंजाम दें एवं इस पूरे तथाकथित कांड में जो भी व्यक्ति जिम्मेदार हैं उन्हें सामने लाएं ताकि जनता उनके संबंध में स्वयं एक निर्णय ले सके।

संस्थाओं के उच्च अधिकारियों को अपने पद को सुरक्षित रखना कहीं अधिक युक्त लगा बजाय निवेशकों के हित को ध्यान रखने का। यह भी रिपोर्ट में बताया गया है कि मॉरीशस एवं अन्य देशों में 'शेल' कंपनियां बनाकर उनके द्वारा पैसा इन शेयरों को कृत्रिम रूप से बढ़ाने हेतु लगाया गया। कुछ वर्षों पूर्व प्रधानमंत्री द्वारा शैल कंपनियों को बंद करने एवं उन पर प्रभावी कार्यवाही करने की बात बड़-चढ़कर की गई थी। भारत के सेबी, आर बीआई, इनकम टैक्स ई डी आदि संस्थाओं ने अडानी ग्रुप के में हो रही इस तेज वृद्धि को शंका की दृष्टि से नहीं देखा और आवश्यक सावधानियां भी नहीं बरती, जिसके कारण इन के शेयर के भाव कृत्रिम रूप से अस्वाभाविक रूप से बढ़ते रहे। हर्षद मेहता का एक ऐसा ही कांड 1992 में हुआ था। उसके बाद कहा जाता है कि नियामक प्राधिकरण एवं संस्थाओं ने बहुत सुधार किया। इसके बावजूद, किस प्रकार विदेशों की जिन कंपनियों ने अडानी ग्रुप में बहुत बड़ी राशि लगाई गई, उनके पास पैसा कहाँ से आया इसकी कोई जांच नहीं की गई। इन कंपनियों को केवल भारत से पैसा बाहर भेजकर वापस अडानी टाुप में पैसा लगाने हेतु काम में लिया गया। रिपोर्ट के अनुसार इस प्रकार की कंपनियों में कोई काम नहीं होता था, और केवल इनको पैसे को विदेश के माध्यम से अडानी ग्रुप के शेयर खरीदने हेतु काम में लिया जाता था।

सत्ताधारी दल और उनके समर्थकों द्वारा इस रिपोर्ट को न केवल खारिज किया जा रहा है बल्कि इसे देश विरोधी गतिविधि तक घोषित कर दिया है। यह समझ से परे है कि किसी उद्योग समूह के बारे में कोई तथ्यात्मक रिपोर्ट सामने आती है, जिससे कई कथित अनियमितताएं होने की शंका उत्पन्न होती है तो उस पर बिंदुवार तथ्यात्मक जानकारी लोगों को उपलब्ध करने के बजाय उस रिपोर्ट को ही देशद्रोही घोषित कर देना कतई उपयुक्त नहीं है। वित्तीय संस्थाओं में देश की जनता का पैसा लगा हुआ है और सरकार यह नहीं कह सकती कि हमें इससे कोई लेना-देना नहीं है। विपक्षी नेताओं के विरुद्ध भारत सरकार के द्वारा किसी न किसी आधार पर कार्यवाही की जाती रही है, किंतु अडानी समूह के बारे में इस प्रकार से आंखें मूंद लेना, सत्ता के साथ गठजोड़ की ओर संकेत करता है। इस विषय में सरकार को सामने आकर, अडानी ग्रुप के बारे में तथ्य स्पष्ट रूप से रखने चाहिए एवं अडानी ग्रुप को भी ऐसा करने हेतु बाध्य किया जाना चाहिए। केवल यह कहना पर्याप्त नहीं है कि एलआईसी और एसबीआई के द्वारा दिया गया लोन इतना अधिक नहीं है कि उनकी वित्तीय स्थिति पर कोई प्रभाव पड़े। यह प्रकरण बहुत छोटा नहीं है, बल्कि लाखों करोड़ों का है, जो अब तक पहले किसी भी प्रकार की वित्तीय अनियमितता से कहीं बड़ा प्रतीत होता है। इसका श्रेष्ठ निराकरण यही है कि हिंडन बर्ग की रिपोर्ट पर संसद में विस्तृत चर्चा हो, ताकि देश की जनता भी समझ सके कि किस प्रकार से कृपा पात्र उद्योग समूह को लाभ पहुंचाया गया, जिससे अडानी ग्रुप की संपत्ति में दिन दुगनी रात चौगुनी से भी कहीं अधिक वृद्धि होती गई। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि हिंडन बर्ग की स्वयं की विश्वसनीयता क्या है अथवा इसके उद्देश्य क्या है? प्रश्न केवल यह है कि उस में उठाए गए बिंदुओं के बारे में वास्तविक स्थिति क्या है? यह वास्तविक स्थिति एक बार जब सामने आ जाएगी एवं उस पर बहस हो जाएगी तो देश की जनता एवं निवेशक निश्चित हो जाएंगे कि उसकी गाड़ी कमाई का पैसा जिन बैंकों अथवा एलआईसी में लगा हुआ है उनके द्वारा किसी गलत काम में पैसा नहीं लगाया गया है। यदि ऐसा अभी समय पर नहीं किया गया तो आगे चलकर वैसी स्थिति बन सकती है जैसे कि विषय माल्या, नीरव मोदी और मेहुल चौकसी के प्रकरण में बनी थी। वहां तो मामला केवल कुछ हजार करोड़ का था, यहां तो लाखों करोड़ का है। इस बारे में सरकार को अपने आप को अलग करने से काम नहीं चलेगा। जनता के प्रति उसका तर् दायित्व है कि वह उसका विश्वास अर्जित करे एवं सही स्थिति जनता के सामने लाये।

भारत की नियामक संस्थाओं और बैंकों की योग्यता और क्षमता में कोई संदेह नहीं है। सवाल यह है कि क्या उन्हें स्वतन्त्र रूप से काम करने दिया गया या नहीं। उन्हें केवल छूट दिए जाने की आवश्यकता है कि वह निर्भीक होकर अपने काम को अंजाम दें एवं इस पूरे तथाकथित कांड में जो भी व्यक्ति जिम्मेदार हैं उन्हें सामने लाएं ताकि जनता उनके संबंध में स्वयं एक निर्णय ले सके। यदि चुने हुए लोग इसमें सम्मिलित है तो अगले चुनाव में जनता उसी अनुसार उत्तर देगी और यदि किसी प्रकार की कोई गलती नहीं है तो संदेह के बादल छट जाएंगे। फिलहाल तो आवश्यकता तो इस बात की है जनता के हक का सम्मान भारत सरकार करे और देश को वह सारी जानकारी सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कराए जिसके बारे में सवाल हिंडन बर्ग रिपोर्ट में उठाए गए हैं।

इस रिपोर्ट को देश विरोधी कहना उचित इसलिए नहीं है कि हिंडन बर्ग के द्वारा वित्तीय अनियमितताओं के बारे में अन्य देशों की कंपनियों के संबंध में भी रिपोर्ट दी गई थी। तब किसी भी देश ने, जिनमें अमेरिका, ब्रिटेन, जापान भी शामिल हैं, ने इसे उनके देश पर हमला नहीं बताया था। यदि इसे देश पर हमला बताया जाता है तो फिर हमले का प्रत्युत्तर देने के लिए एक प्रकार की 'सर्जिकल स्ट्राइक' की आवश्यकता है। क्या उम्मीद करें कि प्रधानमंत्री शीश्रू ही इस पूरे प्रकरण में भी विभिन्न प्रकार के आशंकाओं को निर्मूल करते हुए कोई सर्जिकल स्ट्राइक करके देश के समक्ष दूध का दूध और पानी का पानी कर देंगे?

लोकतंत्र में जनता को यह जानने का हक तो है ही कि अडानी ग्रुप की सम्पत्ति में इतनी अप्रत्याशित वृद्धि (जिसमें कोविद की अवधि भी सम्मिलित है) कैसे हुई और क्या इसमें सत्ता का चरद हस्त भी था?

**–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भागवत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)**

प्रकृति प्रेमियों को सुकून देती है

बाघों की संख्या में अप्रत्याशित बढ़ोतरी विश्व के मानचित्र में राव हम्मीर की वीरभूमि के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले रणथम्भौर किले के चहुँओर फैली राष्ट्रीय बाघ परियोजना में बीते कुछ दशकों के दौरान बाघों की संख्या में हुई अप्रत्याशित वृद्धि हर उस विचारक, चिंतक और प्रकृति प्रेमी के लिए विशिष्ट संतुष्टि एवं सुखद अहसास का कारक है, जिसके माथे पर अतीत में विलुप्तता की ओर बढ़ती बाघ-प्रजाति को लेकर चिंता की गहरी रेखाएं उभर आई थीं। यह बात अलग है कि चिंता की लकीरें अभी भी यथावत हैं।

चिंता की गहरी स्याही से स्वयमेव उभर आने वाली इन लकीरों की अब वजह और जगह बदल गई है। पहले ये लकीरें विलुप्तप्राय प्रजाति के संरक्षण के लिए कुछेक चिंतकों के माथे पर उभरती थीं लेकिन अब स्थिर सीमाओं के भीतर बढ़ते बाघों के घनत्व और उससे उत्पन्न हो रहे क्षेत्राधिकार के स्वाभाविक धीषण संघर्ष ने प्रकृति प्रेमियों के साथ-साथ बतौर

अधिकारी/कर्मचारी रणथम्भौर बाघ परियोजना में तैनात समूचे सरकारी अमले के माथे को चिंता की सलवटों से पाट दिया है। जहां एक ओर बाघों की संख्या में हुई अप्रत्याशित वृद्धि ने परियोजना की सीमाओं से सटे गांवों के ठाम्नीणों और बाघों के बीच वैमनस्यता का भाव उत्पन्न कर टकराव की संभावनाएं बढ़ा दी हैं, वहीं दूसरी ओर बाघों के बीच क्षेत्र के वर्चस्व को लेकर होने वाले खूनी संघर्ष में अनेक बाघों की मृत्यु हो जाना न सिर्फ परियोजना में पदस्थ कार्मिकों बल्कि खुद सरकार के लिए भी चिंता का विषय बन चुका है। भू-क्षेत्र स्थिर है। यह कोई एलास्टिक नहीं है, जिसे खींचकर बढ़ाया जा सके। परियोजना की नींव रखते वक्त किसी ने सोचा भी नहीं था कि भविष्य में एक दिन ऐसा भी आएगा, जब बाघों के घनत्व के मुकाबले इस परियोजना का क्षेत्र ऊंट के मुंह में ज़ीरे की मॉर्निंग बौना दिखाई देने लगेगा।

इस बाघ परियोजना में उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती प्रकार का एनोजिसस फरेस्ट पाया जाता है।



8 5 दिन बाद बाबा श्याम का दरबार श्रद्धालुओं के लिए खोला

खाटूश्यामजी, (निसं)। 85 दिन के लम्बे इंतजार के बाद सोमवार को सुबह 11 बजे बाबा श्याम का दरबार श्याम श्रद्धालुओं के लिए दर्शनायें खोला गया।

राजस्थान सरकार की देवस्थान मंत्री शकुन्तला रावत के श्याम दर्शन करने के साथ ही मंदिर को श्याम दर्शनार्थ खोल दिया गया। जैसे ही स्थानीय नागरिकों को मंदिर खुलने

- अब श्याम के मन्दिर में 14 कतारों में दर्शन हो रहे हैं
- देवस्थान मंत्री शकुन्तला रावत ने श्याम दर्शन करने के साथ ही मंदिर खोला

की सूचना मिली तो लोग श्याम दर्शन करने पहुंचे और श्री श्याम मंदिर कमेटी द्वारा मंदिर के अंदर किए गए नवाचारों की भी प्रशंसा की। अब



खाटूश्यामजी में देवस्थान मंत्री शकुन्तला रावत सहित भक्तों ने श्याम बाबा के दर्शन किए।

श्याम के मन्दिर में 14 कतारों में दर्शन हो रहे हैं। साथ ही बाबा की चौखट के पर एक पारदर्शी शीशा लगाया गया। श्याम बाबा के मंदिर के

अंदर अब भक्तों को सुगमतापूर्वक दर्शन हो रहे हैं। देवस्थान मंत्री रावत ने किए श्याम दर्शन: राजस्थान सरकार की

देवस्थान मंत्री शकुन्तला रावत ने सोमवार को खाटूश्यामजी पहुंचकर बाबा श्याम के दर्शन कर प्रदेश की खुशहाली की कामना की। इस अवसर

राष्ट्रीय राजमार्ग 48 की सर्विस रोड की हालत खस्ता

पावटा, (निसं)। राष्ट्रीय राजमार्ग 48 के सर्विस रोड की हालत खराब हो गई है। सर्विस रोड पर बने गड्ढों में पानी भरने से जगह-जगह तालाब नजर आ रहे हैं। जिससे सर्विस रोड पर आवागम मुश्किल हो गया है।

बारिश की वजह से ललाणा मोड से लेकर से लेकर सीएचसी कट तक बड़े-बड़े गड्ढे बन गए हैं। वहीं वाहन तेज चलाते हैं तो अचानक ब्रेक लेने के प्रयास में बिगड़ जाता है। यह तो संयोग ही अब तक कोई बड़ा हादसा नहीं हुआ। यदि सर्विस रोड में सुधार न हुआ तो किसी भी समय



सर्विस रोड पर बने गड्ढे में भरा पानी।

बड़ी दुर्घटना हो सकती है। ललाणा मोड पर सर्विस रोड पर करीब 3 फीट

गहरा गड्ढा हो गया है। ऐसे ही कई और गड्ढे हैं जिसमें बड़े वाहन तो पार हो

- ललाणा मोड से सीएचसी कट चौराहे तक सड़क बड़े-बड़े गड्ढों में तब्दील

जाते हैं लेकिन छोटे वाहन अक्सर फंस जा रहे हैं। साईकिल व मोटरसाइकिल वालों के लिए यह सबसे बड़ी मुसीबत बने गए हैं। इस रास्ते से स्कूली वाहन सर्वाधिक आते जाते हैं। वहीं प्रशासन व एनएचआई अधिकारियों को भी इस बारे में कई बार अवगत करवाया गया है लेकिन वो भी आंखें मूंदे हैं।

और कुल 52 वयस्क बाघ हो गये हैं।

वर्ष 2011 में राष्ट्रीय व्याघ्र संरक्षण प्राधिकरण द्वारा गठित मिसिंग टाईगर के संबंध में कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में यह स्पष्ट उल्लेख किया कि रणथम्भौर नेशनल पार्क में 40 से अधिक बाघों की संख्या पार्क प्रबंधन के लिये हमेशा समस्या का कारण रही है। वयस्क होने पर बाघ या तो अपनी टैरिटरी से दूर चले जाते है या पूर्व में स्थापित बाघ-बाधिन को उनकी टैरिटरी से विस्थापित कर देते हैं। टाईगर की बढ़ती संख्या के लिये रणथम्भौर टाईंगर रिजर्व में पर्याप्त क्षेत्र उपलब्ध नहीं है। वर्तमान में रणथम्भौर टाईंगर रिजर्व में 23 नर बाघ, 31 मादा बाधिन एवं 23 अल्प वयस्क/शवक, कुल 77 बाघ /बाधिन हैं। इसके अतिरिक्त धौलपुर जिले में 1 नर बाघ एवं 1 मादा बाधिन हैं। इस प्रकार वर्तमान में रणथम्भौर टाईंगर रिजर्व में धौलपुर सहित कुल 24 नर बाघ, 32 मादा बाधिन एवं 23 अल्प वयस्क / शवक सहित कुल 79 बाघ हैं।

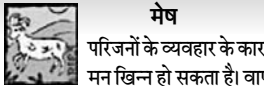
बाघों की यह संख्या रणथम्भौर टाईंगर रिजर्व की वर्ष 1973 में स्थापना के बाद से अब तक की अधिकतम संख्या है। वर्तमान में नर एवं मादा बाघ का अनुपात भी 1 अनुपात 1.3 है। वर्तमान में 32 मादा बाधिनों में से अधिकांश प्रजनन आयु में है, जिसके कारण नये शवकों के जन्म में भी वृद्धि हुई है। वर्ष 2019 से 2021 के बीच 44 शवकों का जन्म हुआ है। अब इन समस्याओं पर सरकार को गौर करना होगा और शीघ्र समाधान ढूंढना होगा।

**–प्रकाश चंद्र शर्मा,
स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक**

सोलंकी का होगा सम्मान

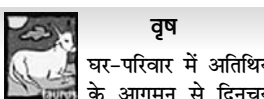
जालोर, (कासं)। भाजपा महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष एवं पूर्व उपसभापति नगर परिषद जालोर मंजू सोलंकी महिला शक्ति शिरोमणि अर्वाई 2023 के सम्मान से दिल्ली में सम्मानित होगी।

जानकारी देते हुए अंतरराष्ट्रीय समरसत्ता मंच के सचिव योगेश कुमार शर्मा ने बताया कि अंतरराष्ट्रीय समरसत्ता मंच एवं इंडो नेपाल ऑर्गनाइजेशन के संयुक्त तत्वावधान में नई दिल्ली में महिला दिवस कार्यक्रम में 12 मार्च को महिला सम्मेलन एवं विचार परस्त्रेशन कार्यक्रम में पूर्व सम्मानित 150 प्रतिमाओं के साथ आपका चयन एवं प्रतिभा मनोयोग महिला शक्ति शिरोमणि अवार्ड से सोलंकी का सम्मान किया जाएगा।



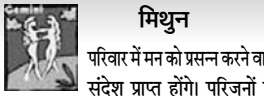
मेष

परिजनो के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। वाणी की कटुता के कारण परिवार में तनाव हो सकता है। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी।



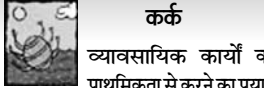
वृष

घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। परिवार में आपसी वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



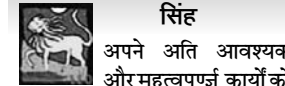
मिथुन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनो के सहयोग से अटक-हूक कार्य बने लगेगे। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। नैकरिणेश व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।



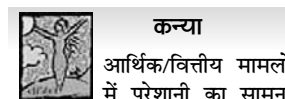
कर्क

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी और व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।



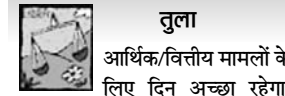
सिंह

अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। नवीन कार्य योजना का क्रियाव्ययन होगा।



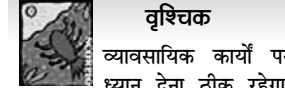
कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। व्यावसायिक मामलों में दुविधा बनी रहेगी।



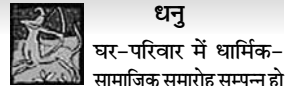
तुला

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटक हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।



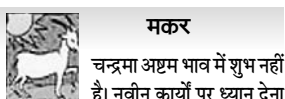
वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



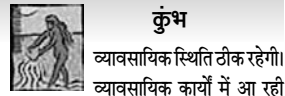
धनु

घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।



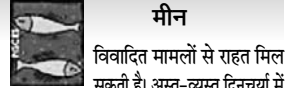
मकर

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।



कुंभ

व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़बटें दूर होने लगेगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मंगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



मीन

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटक हुए कार्य बने लगेगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।